9

हमारा बड़ा महायाजक!

(4:14–5:10)

इब्रानियों की पुस्तक का मुख्य विषय यीशु की महा याजकाई है। यीशु के हमारा महायाजक होने (2:17; 3:1) और हारून और लैव्यव्यवस्था लेवियों की कार्यवाही के ऊपर उसकी श्रेष्ठता के सभी हवाले हम दे चुके हैं। पहले हमने अपने सहानुभूति पूर्ण महायाजक के रूप में यीशु पर इस शानदार पाठ का अध्ययन किया था:

> सो जब हमारा ऐसा बड़ा महा याजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात परमेश्वर का पुत्र यीशु; तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहे। क्योंकि हमारा ऐसा महा याजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; बरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे (4:14–16)।

4:14 में ''हमारा ऐसा *बड़ा महायाजक* है ... परमेश्वर का पुत्र यीशु'' अभिव्यक्ति पर विशेष ध्यान दें। इब्रानियों 10:21 में यीशु को ''महानयाजक'' कहा गया है।[1] यीशु महान याजक[2] है क्योंकि ...

- वह स्वर्गों से होकर गया (4:14)। किसी सांसारिक महायाजक द्वारा अति पवित्र स्थान जिसमें प्रवेश किया गया हो वह शारीरिक पवित्र स्थान (पवित्रों का पवित्र ''परम पवित्र स्थान''; NIV) था, परन्तु यीशु ''स्वर्ग ही में'' गया (9:24)।
- *वह हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी हो सकता है* (4:15)। सांसारिक महा याजकों के लिए हमेशा ऐसा नहीं होता था।
- *वह निष्पाप है* (4:15)। निश्चित रूप में सांसारिक महायाजकों में ऐसी बात नहीं है (देखें 5:3)।
- *वह अनुग्रह का प्रबन्ध करता है।* सांसारिक महा याजक व्यवस्था का बल्कि न्याय का प्रबन्ध कर सकते थे, परन्तु अनुग्रह का नहीं। यीशु ''आवश्यकता के समय सहायता के लिए अनुग्रह'' देता है (4:16)।

इब्रानियों 5:1–10 इस बात के अतिरिक्त कारण बताता है कि यीशु *बड़ा* महायाजक क्यों है यानी वह किसी भी सांसारिक महायाजक से बड़ा क्यों है। (इन कारणों पर चर्चा इस पाठ के अन्त में करेंगे।) पुस्तक में यह ''तर्क'' का भी प्रभाव है, मसीह की उत्तम याजकाई पर चर्चा की पृष्टिभूमि का।[3] यह वचन हमें 5:11–6:20 की चेतावनी और ताड़ना के बाद 7:1–10:18 में

यीशु की याजकाई की लम्बी चर्चा के लिए तैयार करेगा।

महायाजक

इब्रानियों के लेखक द्वारा यीशु को महा याजक कहने पर, उसके यहूदी मसीही पाठकों ने इस रूपक को समझ लिया; परन्तु हम में से अधिकतर लोग नहीं समझते हैं। हम याजकों और महायाजक वाले बलिदानों के प्रबन्ध से व्यक्तिगत रूप से परिचित नहीं हैं; ऐसा हमारे अनुभव से बाहर की बात है। इब्रानियों की पुस्तक पुराने नियम की याजकाई के कई वाले देती है और हम में से अधिकतर लोग उसकी याजकाई के बारे में बहुत कम जानकारी रखते हैं, इस कारण कुछ सामान्य टिप्पणियां, विशेषकर पुराने नियम के महान याजक पर टिप्पणियां देना उचित है।

विशेष वंशज

पहला महायाजक मूसा का भाई हारून, जो लेवी के गोत्र में से था। अगला महा याजक हारून का पहलौठा पुत्र होना था। महा याजकाई सबसे बड़े बेटे से सबसे बेटे को मिलनी थी।[4] हारून की अन्य सन्तानों ने याजकों का काम करना था जबकि लेवी के गोत्र के अन्य सन्तानों ने याजकों के सहायकों का काम करना था।

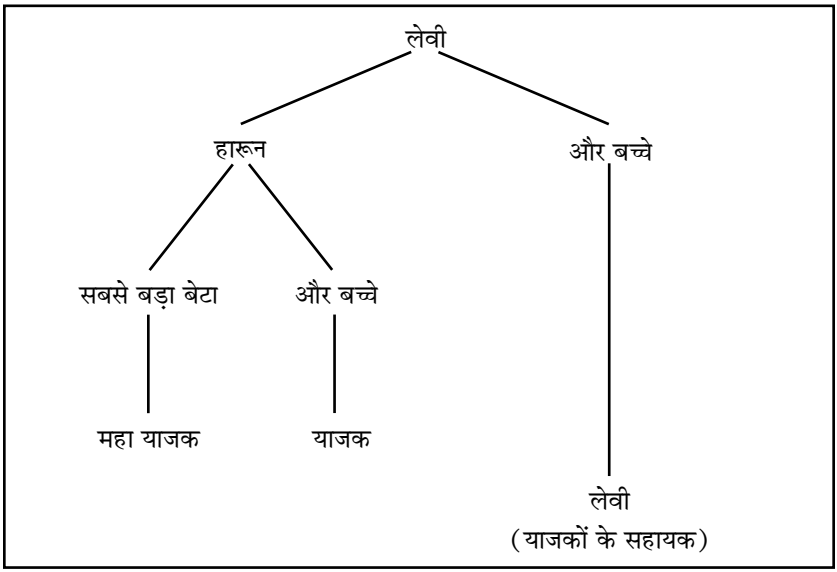

विशेष कर्त्तव्य

महायाजक इस्राएलियों का धार्मिक अगुआ होता था। किसी लोकनेता की ईश्वरीय नियुक्ति न होने पर *वही* लोगों का मुख्य हाकिम होता था।

महायाजक को याजकाई के कुछ काम करने पड़ते थे (देखें निर्गमन 25:30; 27:20, 21; लैव्यव्यवस्था 6:14, 15; 13:2-59; व्यवस्थाविवरण 17:12) इस काम में उसकी मुख्य

जिम्मेदारी याजकों और उनके काम की निगरानी करना था।

महा याजक के रूप में उसके विशेष दायित्व थे। गोत्रों के नामों वाला कवच ले जाने के समय (देखें निर्गमन 28:29), वह इस्राएल और परमेश्वर के बीच मध्यस्थ का काम करता था। अकेला वही ऊरीम और तुम्मीन से सलाह ले सकता था[5] (देखें निर्गमन 28:30)। उनकी ओर (गिनती 27:20, 21)।

एक विशेष दिन

महायाजक का सबसे आवश्यक विशेष दायित्व प्रायश्चित के दिन पूरा किया जाता था। उस दिन, वर्ष में एक ही बार हाता था, महा याजक एक अपने लिए और एक सब लोगों के लिए बलिदान भेंट करता था। वह प्रायश्चित का लहू परम पवित्र स्थान में लेजाकर उसे वाचा के संदूक पर छिड़कता था। परम पवित्र स्थान में जाने की अनुमति केवल महा याजक को होती थी, और वह इस विशेष दिन पर, केवल एक ही बार जा सकता था। इब्रानियों की पुस्तक में प्रायश्चित के दिन के कई वाले हैं, जिस कारण हमें उस दिन होने वाली बातों की जानकारी होना आवश्यक है (देखें लैव्यव्यवस्था 16)।

महा याजक की योग्यताएं

इब्रानियों 5:1-10 महायाजक की भूमिका बताता है और फिर ज़ोर देता है कि यीशु उन शर्तों को पूरा करता है।[6] हमारे वचन पाठ में भी इस योग्यताओं में यह विचार मिलते हैं। (1) लोगों के बीच में से एक पुकार, (2) लोगों के लिए तुलना और (3) लोगों की ओर से आज्ञा *नहीं*।

सांसारिक महायाजक (5:1-4)

(1) *लोगों के बीच में से एक पुकार।* परमेश्वर को बलिदान भेंट करने में लोगों की सिफ़ारिश के लिए महा याजक का ''लोगों के बीच में से दिया जाना'' आवश्यक था। कोई स्वरूप महा याजक नहीं हो सकता था। विशेषकर महायाजक के लिए लेवी के गोत्र का और सीधे तौर पर प्रभु का वंशज होना आवश्यक था।

(2) *लोगों के लिए तुलना।* महा याजक का उन लोगों के साथ जो अपने पापों के लिए भेंट लाते थे, सहानुभूति रखने वाला होना आवश्यक था। यदि वह सहानुभूति न रखता तो उसने उनका अच्छा प्रतिनिधि नहीं होना था। महायाजक को सहानुभूति करनी चाहिए, क्योंकि मनुष्य होने के कारण (आयत 1) उसमें भी वही निर्बलता होती थी, जो उनमें थी जिनका वह प्रतिनिधित्व करता था (आयत 2ख)। इसके प्रमाण के रूप में लेखक ने लिखा कि महायाजक को लोगों के लिए बलिदान भेंट करने से पहले प्रायश्चित के दिन अपने लिए बलिदान भेंट करना आवश्यक है (आयत 3)।

(3) *लोगों की ओर से आज्ञा नहीं।* महायाजक को अपने आप नहीं बल्कि परमेश्वर द्वारा ठहराया जाना आवश्यक था (आयत 4)। महायाजक की याजकाई के बारे में व्यवस्था विवरण पढ़ें। उपयुक्त वंशावली सबसे बड़ी योग्यता है। कोई व्यक्ति इस्राएली होने के बावजूद करूणामय हो सकता है, परन्तु महा याजक होने के योग्य नहीं।

बड़ा महा याजक (5:5-10)

यीशु की तीन योग्यताएं थीं। वास्तव में उसमें किसी भी शारीरिक महायाजक से बढ़कर ये योग्यताएं थीं। इब्रानियों के लेखक ने अपनी आदत के अनुसार कहीं न कहीं उन योग्यताओं की चर्चा उल्टे क्रम में लिखी।

(3) *लोगों की ओर से आज्ञा* नहीं। यीशु को महा याजक *परमेश्वर द्वारा* ठहराया गया था न कि वह स्वयं बना (आयतें 5, 6)। इसके बलिदान के रूप में इब्रानियों के लेखक ने ईश्वरीय पुत्रत्व को याजकाई की अवधारणा से मिलाते हुए पुराने नियम के दो वचन दोहराए (भजन संहिता 2:7; 110:4)।

(2) *लोगों के लिए करना।* यीशु *सहानुभूति रखने वाला* महा याजक है (आयतें 7-10; देखें 2:17; 4:14-16)। उसे उस सब में से गुज़रना पड़ा जिसमें से हम गुज़रते हैं जिस कारण वह ''हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ ही'' हो सकता है (4:15)। इसके प्रमाण के रूप में इब्रानियों के लेखक ने गतसमनी के बाग और क्रूस के साथ उसकी बाद की घटनाओं का वाला दिया। इस तथ्य में कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (5:5) उसे दुख उठाने या दुख उठाकर सबक सीखने से छूट नहीं थी (आयत 8)।

(1) *लोगों में से एक पुकार।* यीशु *मनुष्य* के रूप में से कष्टों में से गुज़रा। उसका कष्ट ''अपनी देह में रहने के दिनों में'' आया था (आयत 7)। यह विशेष योग्यता यीशु को हमारा मध्यस्त बनने के योग्य बनाती है (1 तीमुथियुस 2:5)।

एक बड़ा महायाजक

पूरे वचन पाठ में महायाजक की योग्यताओं के सम्बन्ध में ज़ोर दिया गया है कि यीशु पृथ्वी के महा याजकों से उत्तम (श्रेष्ठ) है।

- वह हारून का पहलौठा नहीं था, परन्तु परमेश्वर का पुत्र है (5:5)।
- उसने महा याजक बनने की योग्यता *सिद्धता से* पाई (5:9क)।
- वह आज्ञा मानने वालों के लिए ''अनन्त उद्धार'' लाता है (5:9ख), केवल हारून की याजकाई के द्वारा भेंट किए गए बलिदानों के द्वारा पाप के अस्थाई ढांपे जाने से ही नहीं।
- वह श्रेष्ठ क्रम अर्थात मलिकिसिदक की रीति पर हमारा महायाजक है (5:6, 10)। इसका क्या अर्थ है? लेखक ने इस विषय पर चर्चा ताड़ना के एक और भाग के बाद की।

हमारा महायाजक यीशु *महान* है!

सिखाने वाले के लिए नोट्स

पुराने नियम का महायाजक कई बार सभी याजकों के ''साधारण'' वस्त्र पहन लेता था। जब वह अपनी डयूटी कर रहा होता था जो केवल महा याजक के द्वारा ही की जा सकती थी, वह एक विशेष नीला वस्त्र पहनता था (देखें निर्गमन 28:31-35)। प्रायश्चित के दिन वह सनी का वस्त्र पहनता था (लैव्यव्यवस्था 16:4, 11-23) जो स्पष्टतया उस दिन के लिए रखा गया होता था।

टिप्पणियां

[1]इब्रानियों 10:21 में KJV में ''महायाजक'' है, परन्तु यूनानी धर्मशास्त्र में ''महा'' या ''प्रधान'' (*arche*) के बजाय ''महान'' (*megas*) के लिए शब्द है। [2]पुराने नियम में ''महायाजक'' (*gadol*) अभिव्यक्ति में इब्रानी शब्द का अनुवाद ''उच्च'' है। नये नियम में यूनानी शब्द के अनुवाद ''महायाजक'' (*archiereus*) का अर्थ ''प्रधान याजक'' है। केवल यीशु ही है जिसे ''बड़ा [*megas*] महायाजक [*archiereus*]'' नाम दिया गया है। [3]पहले पाठ में रूपरेखा देखें। [4]परन्तु शारीरिक दोष ज्येष्ठ पुत्र को अयोग्य कर सकता था। इसके अलावा ज्येष्ठ पुत्र कई और प्रकार से अपने आपको अयोग्य बना सकता था (जैसे कुंवारी के साथ विवाह न करके)। [5]ऊरीन और तुम्मीन किसी विशेष परिस्थिति में परमेश्वर की इच्छा तय करने के लिए इस्तेमाल किया जाने किसी प्रकार का यन्त्र था (या थे)। [6]इस पाठ में चार्ट देखें।

महा याजक के लिए आवश्यक बातें	**योग्यता का कारण**	**यीशु की वास्तविकता**	**हमारे लिए परिणाम**
लोगों के बीच में से बुलाहट (5:1)	परमेश्वर को बलिदान भेंट करने में लोगों के लिए विनती करने वाला बनना	पुरुष (5:7क)	यीशु हमारा मध्यस्थ है (देखें 1 तीमु. 2:5)
लोगों के लिए करुणा (5:2)	परमेश्वर के सामने लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिए उनके साथ *महसूस* करना	सहानुभूति रखने वाला महा याजक (5:7-10)	यीशु हमारे साथ *महसूस* करता है (देखें इब्र. 4:14-16
लोगों की ओर से आज्ञा *नहीं* (5:4)	काम को करने के लिए परमेश्वर द्वारा स्वीकृत होना	परमेश्वर की ओर से ठहराया हुआ (5:5, 6)	यीशु का बलिदान स्वीकार किया जाता है; उद्धार सब आज्ञा मानने वालों के लिए दिया जाता है